शोध सारांश

गांधीजी का चिंतन व दर्शन इतनी विविधता लिए हुए है कि समय का काल-खण्ड या परिस्थितियाँ जो भी हो, उस समय के विचारों की आलोचना व उससे होने वाली परेशानियों का समाधान के कुछ तत्व मिल ही जाते हैं। इसीलिए गांधीजी को कुछ विद्वान परम्परावादी, आधुनिकतावादी तो कुछ उत्तर-आधुनिकतावादी की तरह व्याख्यायित करते हैं। प्रस्तुत लधु-शोध प्रबन्ध में गांधीजी के विचारों में उत्तर-आधुनिकता के तत्व को खोजने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध के पहले अध्याय में आधुनिकतावाद और उत्तर-आधुनिकतावाद के मूलभूत अवधारणाओं के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में आधुनिकतावाद के नये स्वरूप के बारे में भी चर्चा की गयी है। आधुनिकतावाद ने जिन मूल्यों यथा सार्वभौमिकतावाद, व्यक्तिवाद, बुद्धिवाद का निर्माण किया उसका खण्डन उत्तर-आधुनिकतावादी किस प्रकार करते हैं, इसका भी वर्णन किया गया है। आधुनिकतावाद के मूल्यों का खण्डन करते हुए उत्तर-आधुनिक विचारक अपने मूल्यों यथा स्थानीयता, महान-वृत्तान्तों का खण्डन, विखंडनवाद तथा सापेक्षिक सत्य का निर्माण करते हैं।

प्रस्तुत लधु-शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में,'आधुनिकता की अवधारणा और गांधीजी का हस्तक्षेप' संबंधी विचार-विमर्श किया गया है। गांधीजी द्वारा आधुनिकतावाद के निर्मित मूल्यों तथा उसके द्वारा निर्मित सभ्यता का सकारात्मक आलोचना प्रस्तुत किया गया है। सकारात्मक आलोचना का तात्पर्य यहाँ यह है कि गांधीजी को जब भी लगा कि इसके कुछ गुणों का समर्थन करना चाहिए, तो किया है। इस शोध-प्रबन्ध में आधुनिक सभ्यता की समीक्षा वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रख कर, गांधीजी के नजरिये से किया गया है।

प्रस्तुत लधु-शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में,'गांधीजी के विचारों में उत्तर-आधुनिक तत्व' संबंधी विचार-विमर्श किया गया है। इस अध्याय में जिस प्रकार उत्तर-आधुनिक विचारक आधुनिकतावाद के मूल्यों को नकारते हुए अपने मूल्यों की स्थापना करते हैं उसी प्रकार गांधीजी ने भी आधुनिकता के उन सभी मूल्यों का खण्डन करते हैं तथा अपने मूल्यों की स्थापना करते चलते हैं। इस अध्याय में गांधीजी को एक उत्तर-आधुनिक राष्ट्रवादी के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। गांधीजी पश्चिमी उत्तर-आधुनिक विचारकों से किस प्रकार भिन्न हैं, यह भी बताया गया है। प्रस्तुत शोध-कार्य अपने उदेश्य

में सफल रहा। इस शोध-कार्य की परिकल्पना (गांधीजी के विचारों में उत्तर-आधुनिकता के तत्व हैं।) भी सही साबित हुई।

निष्कर्षतः यह शोध-प्रबंध गांधी जी के विचारों में उत्तर-आधुनिकता के तत्व को ढूँढता है पर गांधीजी का चिंतन में सिर्फ इतना नहीं है। उसका दायरा बहुत विस्तृत है। फलतः गांधीजी के विचारों को किसी भी निश्चित विचारधारा से बाँधने का प्रयास उनके विचार की व्यापकता को संकीर्ण बना देना ही होगा। यह कहना असंगत नहीं कि गांधी जी का विचार परंपरागत, आधुनिक व उत्तर-आधुनिक की विचार श्रेणियों से भिन्न सभी संस्कृतियों को बाँधने वाली; हर संस्कृति के सकारात्मक पक्षों में आस्था प्रकट करने वाली, प्रत्येक जाति व भाषा के प्रति समान सम्मान देने वाली एक अति अन्तरंग मानवीय विचारधारा है।